लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

मिचिङ लोकगीत : एक झलक

✍ चेनिमाइ पोलेङ

मिचिङ जनजाति असम की एक ऐसी जनजाति है जिसका समाज-जीवन अत्यंत सुंदर है। यह जनजाति अपने सुंदर गीत तथा सुंदर पोशाक से समृद्ध है। मिचिङ लोगों के अपने विभिन्न प्रकार के लोकगीत हैं। मिचिङ लोकगीतों में मिचिङ जनजीवन के अनेक चित्र देखने को मिलते हैं। प्रेम-विरह आदि से संयुक्त इन लोकगीतों में मिचिङ लोगों के संस्कृति प्रेमी-मन का भी परिचय मिलता है। इन गीतों में *अइ-नि: तम* (प्रेम-गीत) सबसे ज्यादा गाये जाते हैं, जो हर उम्र के लोगों में लोकप्रिय हैं। *अइ–नि: तम* के अलावा अन्य कई प्रकार के लोकगीत भी मिचिङ समाज में प्रचलित हैं, जैसे - *लत्ता च: मान नि: तम* (आंगन में खेलते समय गाए जाने वाला गीत), *ममान नि: तम* (हंसी-मजाक वाले गीत), *बूरदुग नि: तम* (उत्सव के गीत), *मिदांङ नि: तम* (विवाह के गीत), *जीयार नि: तम* (योजना के गीत), *चल्लाया गीत* (प्रणयमूलक गीत), *आ: बाङ* (श्लोक), *काबान* (विनय-गीत), *द:हिङ नि: तम* (कहानी-गीत), *क: नि: नाम* या *बू: नी नि: तम* (लोरी) और *आनु नि: तम* (आधुनिक गीत) आदि। नीचे कुछेक प्रमुख गीतों पर आलोकपात किया जा रहा है।

1. लत्ता च: मान नि: तम :

ये गीत साधारण रूप से कर्म-विराम के समय चाँदनी रात में आंगन में बैठकर या खड़े होकर गाये जाते हैं। गीत के साथ-साथ लोग नृत्य भी करते हैं। ये गीत दो हाथों से ताली बजाकर गाये जाते हैं। वाद्ययंत्रों के प्रयोग के विपरीत मिट्टी या बांस से बने हुए मंच पर ताली बजाकर और हाथों से आवाज निकालकर ये गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में प्रेम-वर्णन के अलावा पहाड़ से समभूमि तक आने में बाधा, खाद्य का अभाव आदि अनेक समस्याओं का उल्लेख भी मिलता है। जैसे -

गीत :

सुंबुर सुंबुर नाकया सुमराक नाकया
आम: सिकोङ करया दांबोया दांबोया
सिकोङ कोरोङ यामेया दांबोया दांबोया
रगनोमो यापी: मो तिरयाब: ग
रावकामो याकामो तिरयाब: ग

अर्थ : सब लोग खुशी से झील जैसे स्थान पर एकत्रित होते हैं। जिस प्रकार चिड़िया अपने पिंजरे में बंदी होकर रहता है और उससे मुक्ति पाते ही चारों और आनन्द में उड़ने लगता है, ठीक उसी प्रकार लड़के-लड़कियाँ भी अपने घर से निकलकर चारों ओर झूमने लगे हैं।

2. मोमान नि: तम :

मोमान नि: तम या हंसी-मजाक के गीतों को अंग्रेजी की छंदयुक्त कविता की भाँति छोटे-छोटे लड़के-

लड़कियाँ खेलते समय गाते हैं । इन गीतों का कोई विशेष अर्थ नहीं होता है ।

गीत :

डोनासिरि डोनबोरा बेन्ने साति इंकबोरा

नाप्प: दीसन नाम्बोरा गेरू: दासिन ताम्बोरा

येबु: दसिन नाम्बोरा

अर्थ :

धनशिरि धनबर

खोला फटा छाता

मुख बड़े, कान भी लंबे

नाक बड़ा और मोटा ।

3. अई नि: तम :

मिचिङ समाज में *अई नि: तम* गीत का विशेष महत्व है । ये गीत अपने प्रियजन के लिए गाये जाते हैं । इन्हें प्रणय-गीत कहा जाता है । ये उद्दाम यौवन की गीतिव्यंजक अभिव्यक्ति होते हैं । बच्चों से लेकर बूढ़ों तक *अई नि:तम* गीत गाते हैं, किन्तु मूल रूप से ये गीत युवक-युवतियाँ गाते हैं । इन गीतों में नये जीवन के रस ढूंढ़ते हुए सृष्टि के नियम को न मानकर अपने जीवन-साथी की तलाश करने का वर्णन है । यौवन के समय मन में उठनेवाले प्रेम को इन गीतों के माध्यम से प्रकाशित किया जाता है । प्रियतम-प्रियतमा के लिए अन्तर्मन के कोने से निकलनेवाले प्रणयमूलक रस-स्वरूप मीठे-मीठे गीतों को *अई नि: तम* कहते हैं ।

गीत :

रीनाजि आप्पुन काम्पोदाम नाम्बेगयेमल नाम्पोदाम

ओईनोक दुमसृङ कांपोदाग कावोमयेमल म: पोदाग

मोत: लाहंगे कादुसाङ आदियलम कापोदोप

आईप: म: लाई कादूसाङ म: नाम ओईनाम का: तुमदोप

युम्मोम युबा: दृदो ओईनोम म: पा: यमूल

आसिनाङ ओनाम आबादाम यूम्मि द:मि: योकपामदाम

आ: नो रुयिल दु: दोवम ओईनोम म: पा: यमूल

बोलप निदन: आसिदम तोलप बिद्दोप का: दू: न:

अर्थ : नाहर के फूल सफेद होते हैं और उन फूलों की खुशबू भी अच्छी लगती है । उसी प्रकार तुम्हारे सुंदर मुखमंडल को देखकर बहुत अच्छा लगता है । क्या दूर से देखने के कारण पहाड़ सुंदर दिख रहा है? हे प्रेयसी ! मैं प्रेम के कारण तुम्हें सुंदर देख रहा हूँ । रात को सोते समय तुम्हारी याद अधिक आने के कारण मेरी नींद गायब हो जाती है । नदी के किनारे बैठते समय तुम्हारी याद आने पर ऐसा लगता है जैसे पानी की लहरें उल्टी बह रही हों ।

4. लृगांग या बूरदुग नि: तम:

आलि–आ: ये लृगांग उत्सव में *गुमराग* ढोल के साथ-साथ सुर में सुर मिलाते हुए गाये जानेवाले गीतों को *लृगांग* या *बूरदुग नि: तम* कहते हैं । ये गीत पहले जोनाइ अंचल में ही प्रचलित थे। किन्तु आजकल समग्र मिचिङ समाज में ये प्रचलित हो चुके हैं । इन गीतों का मुख्य विषय प्रेम है। लड़के-लड़कियाँ चंचल हँसी के साथ पार्थिव जगत के अपूर्व सौंदर्य को अनुभूत करते हैं। वे इस प्रकार नृत्य करते हैं मानो पेड़-पौधे लहरा रहे हों । इस पृथ्वी को और अधिक सुंदर और रंगीन करने का आह्वान इन गीतों में प्रतिध्वनित होता है ।

गीत :

य: दुमलाब:म लामम सुतोका

लो: नि दुमलाब:म लामम सुतोका

य: दोअरो पोगकूरला:ज

य: केकतोगों बोरोङ सुतोको

अमुम बुलुवा केकतोगो बोरोङ सुतोका।

अर्थ : साथियो ! चलो, हम सब एक साथ आनन्द उठाएँ, सभी इकट्ठे होकर उत्सव की तैयारी करो। हे युवतिया ! तुम सभी अपने लम्बे बालों को सुंदर रूप से कंघी करके सज-धज कर आओ। हम सबकी इस सुन्दर पृथ्वी को रंग-आनंद से और अधिक रंगीन कर दो।

संपर्क-सूत्र :
सुवनी मादोक, बिलमुख, लखीमपुर
ई-मेइल : polengchenimai52@gmail.com